लिए तार या कांटों की डागड लगाना। रोपण के पहले वर्ष में कम से कम दो बार निंदाई करना चाहिए। निंदाई के साथ जुताई करने से पौधे में अच्छी बढ़वा होती है। पौधों की जड़ों को दीमक से बचाने के लिए कीटनाशक जैसे बॉविस्टीन मेलाथियान आदि का 1 प्रतिशत सान्द्रता के घोल का प्रयोग किया जाता है।

उपयोगिता – इसके बीज खाने में काम आते है इसकी पत्तियाँ मवेशियों के लिए चारे के लिए काम में आती है। क्योंकि इनमें कैल्शियम, कार्बन एवं नाइट्रोजन भरपूर होती है। इसके वृक्ष का उपयोग गोंद की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसकी लकड़ी को आसानी से मशीनों द्वारा चीरा जाने के कारण आधुनिक साजसज्जा में उपयोग में आने वाली सामग्री में उपयोग किया जाता है। इसके अलावा यह लकड़ी के बक्से, डब्बी, दरवाजे, पोल एवं कम कीमत वाले फर्नीचर बनाने के काम आती है। इसके साथ ही यह भारत में सभी जगह आदिवासियों द्वारा जलाऊ के रूप में उपयोग की जाती है। यह कृषि वानिकी के लिए अत्यंत उपयोगी प्रजाति है। इसके बीज में 35 से 50 प्रतिशत तक तेल पाया जाता है जो कि खाद एवं औषधीय उपयोगिता के कारण काफी लाभदायक होता है। इसके बीज से प्राप्त होने वाला तेल खाने में भी काफी पोष्टिक होता है एवं सौन्दर्य प्रसाधन और त्वचा संबंधी रोग एवं शरीर पर पड़ने वाले छब्बे कील मुहाँसों आदि को दूर करने में उपयोग किया जाता है। इसे शरीर में होने वाले अंदरूनी दर्द के लिए बकरी के दूध के साथ मिलाकर पीने से आराम मिलता है। यह वृक्ष कुसमी लाख तैयार करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले कीड़े के होस्ट के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस पर तैयार होने वाले कीड़े के लार्वा एक आकार के एवं अधिक विकसित होते हैं। इस वृक्ष से पाए जाने वाली गोंद में एडिसिव गुणवत्ता अधिक होने के कारण यह बासेरागम के समान उपयोगी होती है एवं टेक्सटाईल के डेसिंग के काम आती है। इसकी छाल और फल से प्राकृतिक वार्निस प्राप्त होती है। क्योंकि इसकी छाल में 13 से 14 प्रतिशत तक टेनिन एवं 9 से 10 प्रतिशत तक नानटेनिन पाए जाते है। इसकी जड़ काफी कड़वी होती है जो कि पित्त एवं खून से संबंधित बीमारियों को दूर करने के प्रयोग में आती है। इसकी पत्तियों का रस पाचन क्रिया ठीक करने, कफ निकालने एवं इकलाने वाले बीमारियों में काम आती है।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शास्त्र

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

अचार

(बुकनेनिया लेन्जन)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – अचार

वानस्पतिक नाम – बुकनेनिया लेंजन

प्रस्तावना – यह एक मध्य आकार का सीधे तने वाला वृक्ष है जो कि भारत के पर्णपाती वनों में (उत्तर–पश्चिम को छोड़कर) पाया जाता है। यह ऐनाकार्डिएसी कुल का सदस्य है सामान्यतः वृक्ष की लम्बाई 12 से 15 मीटर एवं गोलाई 40 से 100 सेमी. तक पाई जाती है। यह कई तरह की मिटटी में वृद्धिकर लेता है परंतु चिकनी काली कछारी मिटटी में इसकी बढ़त अच्छी होती है। इसके वृक्षारोपण करने पर प्रथम वर्ष में पौध की वृद्धि काफी धीमी होती है लेकिन दूसरे वर्ष से उपयुक्त वातावरण अर्थात प्रतिदिन निदाई–गुड़ाई सिंचाई होने पर इसकी बढ़त काफी तेजी से होती है। यह मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडू, पंजाब राजस्थान एवं गुजरात में पाया जाता है। भारत के अलावा यह नेपाल, म्यामार, कम्बोडिया, लॉस एवं थाईलैण्ड में भी पाया जाता है। इस वृक्ष की छाल गहरे सिलेटी/काले रंग की मोटी चौकोर प्लेट की आकार की कटी हुई होती है। इसके फूल सफेद रंग के, नई शाखाएँ एवं पत्तियों की सतही सतह चिकनी कोमल सिल्की हेयर से आच्छादित होती है। पेड़ में पतझड़ गर्मी के मौसम में काफी कम समय के लिए होता हैं। मार्च से अप्रैल माह के मध्य पतझड़ होता है जबकि नई पत्तियाँ नई माह में आना प्रारम्भ हो जाती है।

प्राप्ति स्थान – मध्य प्रदेश में यह मंडला, बैतूल, देवास, जबलपुर, पन्ना, छिंदवाड़ा आदि जिलों में पाया जाता है।

मृदा का प्रकार – यह अधिकांशतः सभी जगहों में विशेष तौर पर चिकनी दोमट, काली मिटटी में सुगमता से उगता है।

बीज चक्र – वृक्ष में फल प्रतिवर्ष लगते है परंतु अधिकाधिक फलन एक वर्ष के अंतराल पर होता हैं।

पुष्पन का समय – पुष्पन का समय जनवरी से मार्च तक होता है।

फलन समय – वृक्ष में फलन मार्च से अप्रैल माह में होता है एवं बीज परिपक्व मई माह के द्वितीय से तृतीय सप्ताह के मध्य होते है।

एकत्रीकरण समय – बीज का एकत्रीकरण माह मई के प्रथम से द्वितीय सप्ताह के मध्य में किया जाना उचित होता है।

प्रतिकिलो बीजो की संख्या – एक किलोग्राम बीज में बीजों की संख्या 3500 से 4000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि – बीज की जीवन क्षमता अवधि 6 से 12 माह तक रहती है।

अंकुरण प्रतिशत – ताजे बीज में 40 से 50 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति मे –

प्रथम तीन माह –	40 से 50 प्रतिशत
तीन से छः माह –	25 से 30 प्रतिशत
छः से नौ माह –	15 से 20 प्रतिशत
नौ से बारह माह–	15 प्रतिशत से कम

उपयुक्त भंडारण – बीज को पालीथीन टिन कनटेनर में कमरे के तापमान में भंडारित करना उचित होता है।

बुआई पूर्व उपचारण – 0.1 प्रतिशत सांद्रता के मरक्यूरिक क्लोराइड घोल में 2 मिनिट तक डुबोकर रखने के पश्चात् साफ पानी 2 से 3 बार धोकर बुआई की जाए अथवा 10 प्रतिशत सांद्रता वालेसल्फुरिक अम्ल में 10 मिनिट डुबोकर रखने के पश्चात साफ पानी 2 से 3 बार धोकर बुंआई करना।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अंकुरण हेतु बीज की बुआई रेत + मिटटी को 2:1 के अनुपात में लेकर मिश्रण तैयार कर बुआई करना उचित होता हैं।

बुआई का समय – बीज की बुआई का उपयुक्त समय जून माह होता है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 4 से 6 सेमी. रेत एवं 1 से 2 सेमी. मिटटी के मिश्रण की परत बिछाकर करना चाहिए। बीज को पोलीथीन की थैलियों में भी उक्त दर्शाए मिश्रण में सीधे बुआई की जा सकती है।

रखरखाव – रोपण क्षेत्र में मवेशियो से सुरक्षा के